Title: Reported change in the place of printing the 'Ashok Samrat Lat' (National Emblem) on currency notes.

श्री नरेन्द्र कुमार कुश्वाहा (मिर्ज़ापुर) : सम्राट अशोक की लाट का विय है। माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि जो सम्राट अशोक की लाट है, यह पूरे कृषि प्रधान हिन्दुस्तान, सोने की चिड़िया इंडिया और भारत का एक प्रतीक बना हुआ है। इससे भावनात्मक मामला जुड़ा हुआ है, जो मैं स्पट करना चाहता हूं। पिछली एन.डी.ए. की जब सरकार थी, उस जमाने में इस लाट को नोट से किनारे कर दिया गया। हमारे यहां जो नोट मिलता है, मुद्रा मिलती है, उस पर सम्राट अशोक की लाट छपी हुई है। पहले नोटों पर महात्मा गांधी का फोटो एवं सम्राट अशोक की लाट छपी थी। परन्तु राजनीति से प्रेरित होकर इसको किनारे किया गया। यह बिल्कुल अन्याय किया गया है। इसका सीधे-सीधे लगाव कुश्वाहा, काछी, शाक्य, सैनी, मेहतो, गेहलोत, मेहता आदि जाति के लोगों से है, जो हिन्दुस्तान में 12 प्रतिशत हैं। उन लोगों का कहना है कि सम्राट अशोक के द्वारा यह लाट प्राप्त हुई है। सम्राट अशोक हमारी ही कौम में पैदा हुए हैं और ऐसी कौम की भावनाओं को, 12 प्रतिशत लोगों की भावनाओं को पूरे देश में जो ठेस पहुंचाई जा रही है, इसके बदले में मैं चाहता हूं कि यू.पी.ए. की सरकार उस अवमानना को और भावनाओं को ध्यान में रखते हुए लाट को पुनः नोट के बीच में रखे। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो यह घोर अन्याय होगा। यह जन्भावनाओं के विपरीत है, देश की 12 प्रतिशत आबादी से सम्बन्धित है।

MR. SPEAKER: Please conclude. Repetition will not be allowed.

श्री नरेन्द्र कुमार कुश्वाहा : माननीय अध्यक्ष जी, इसका लोग सड़कों पर उतरकर मुकाबला करेंगे। इस मामले में कार्रवाई की अपेक्षा की जाती है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बात क्यों नहीं सुनते हैं?

Shri Furkan Ansari − not present.